भारत के पर्यावरण संरक्षण में जन आन्दोलनों का योगदान

*डॉ. रूपा मंगलानी
**सहदेव सिंह चौधरी

शोध–सार

प्रकृति का आदर, रक्षण, संवर्धन भारतीय दर्शन एवं संस्कृति की विशेषता रही है। भारत में पर्यावरण संरक्षण व्यक्ति की जीवन शैली का अभिन्न अंग रहा है। भारत के संविधान में राज्य के **नीति निदेशक सिद्धान्त एवं नागरिकों के मौलिक कर्तव्य** के रूप में पर्यावरण संरक्षण का उल्लेखित है। देश में पर्यावरण सक्रियतावाद को पर्यावरण आन्दोलनों के रूप में देखा जाता है। स्वतन्त्रता के बाद विकास के असंगत प्रतिमान से उपजी पर्यावरणीय समस्याओं के विरुद्ध पर्यावरण संरक्षण के जन आन्दोलन जनसंघर्ष की अनूठी अभिव्यक्तियाँ है।

शब्द कुंजीः पर्यावरण सक्रियतावाद, पर्यावरणीय आन्दोलन, टिकाऊ विकास, सहभागी लोकतंत्र, सामुदायिक भागीदारी।

शोध प्रविधि : प्रस्तुत शोध पत्र में मुख्यतः ऐतिहासिक, वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक शोध प्रविधि का प्रयोग किया गया है। सूचनाओं के लिए द्वितीयक आंकड़ों का प्रयोग किया गया है, जैसे– समाचार पत्र–पत्रिकाएं पुस्तकें शोध पत्र, ऑनलाइन वेबसाइट्स आदि।

परिचय :

"सिर सांटे रूंख रहे,तो भी सस्तो जाण।–

" अगर किसी पेड़ को बचाने के लिए अपना सिर भी कुर्बान करना पड़े तो यह सार्थक है।"

–अमृता देवी बिश्नोई, 21 सितंबर 1730

वृक्षों के रक्षा के लिए अपने प्राणों की आहुति देने वाली राजस्थान की बिश्नोई आन्दोलन की पर्यावरण संरक्षिका अमृता देवी बिश्नोई का उक्त कथन एवं बलिदान भारत ही नहीं वरन संपूर्ण विश्व में पर्यावरण संरक्षण की नायाब अमर गाथा है।

पर्यावरण संरक्षण के लिए राज्य सत्ता से कहीं पहले व्यक्ति द्वारा अनूठे प्रयास किए हैं। मुनष्य और प्रकृति का संबंध सभ्यता के प्रारंभ से ही जुडा है। किंवदंतियों या कथाएं चाहे कुछ भी रही हों किंतु यथार्थ के धरातल पर मानव द्वारा प्रकृति की पूजा, संरक्षण और उसके संवर्धन की समझ जीवन मूल्यो से जुडी है। भारत में जनता की सामूहिक चेतना से पर्यावरण को बचाने के जाने अनजाने अनगनित जन आंदोलनों के अनेक उदाहरण हैं जिनसे देश का पर्यावरण संरक्षण का विमर्श एवं पर्यावरणवाद विकसित हुआ है। प्रकृति के कण–कण के साथ एकात्मकता का अनुभव और कम से कम हानि पहुँचाना चिरकाल से भारतीय जीवन दर्शन रहा है। प्रकृति पूजक हमारे देश में पर्यावरण संरक्षण के प्रभावशाली योगदान रहें हैं देश के अलग–अलग क्षेत्रों में संगठित या असंगठित रूप से संचालित किए गए। इन अभियानों में वंचित वर्गों, महिलाओं, निर्धनों एवं हाशिए पर रखे गए समुदाय ने **'जल,जंगल**

और **जमीन'** को बचाने के लिए न केवल स्वर बुलंद किए हैं बल्कि पारिस्थितिकी संतुलन की औपनिवेशिक नीतियों में बदलाव लाकर पर्यावरण मित्रवत जनहितैषी नीतियों के निर्माण के लिए प्रेरणा दी है। भारत में पर्यावरण संरक्षण के प्रारंभिक आंदोलनों (70–80 के दशक) के अध्ययन में पर्यावरण संरक्षण के साथ–साथ सहभागी लोकतंत्र, पर्यावरण निर्णयों में सार्वजनिक सहभागिता, सामाजिक न्याय, टिकाऊ विकास आदि मुद्दों के सदर्भ में किया जा सकता है।

पर्यावरण आंदोलन की अवधारणा

पर्यावरण संरक्षण की महत्त्वपूर्ण अवधारणा पर्यावरण सक्रियतावाद है। पर्यावरणीय सक्रियतावाद के अंतर्गत पर्यावरण संरक्षण एवं संवर्धन के उद्देश्य से सामाजिक कार्यकर्ताओं, पर्यावरणविदों, गैर–सरकारी संगठनों, मानवाधिकार समूहों आदि द्वारा किए गए क्रियाकलापों को सम्मिलित किया जाता है। भारत में पर्यावरणीय सक्रियतावाद को मुख्यतः पर्यावरण आंदोलनों के रूप में देखा जाता है। सार्वजनिक नीति में परिवर्तन के माध्यम से पर्यावरण की रक्षा के लिए होने वाले विरोध को पर्यावरण आंदोलन कहते है। पर्यावरण आंदोलन मूलतः एक सामाजिक और राजनीतिक आंदोलन है जिसका उद्देश्य प्राकृतिक पर्यावरण की सुरक्षा, संरक्षण और सुधार करना है। यह आंदोलन पर्यावरणीय समस्याओं, जैसे– प्रदूषण, वनों की कटाई, जलवायु परिवर्तन, जैव विविधता की हानि आदि के खिलाफ जागरूकता फैलाने और इनके समाधान के लिए नीतियों और कार्यक्रमों की मांग करता है। इसे '**हरित आंदोलन'** या '**संरक्षण आंदोलन'** भी कहा जाता है।

क्रिस्टोफर रूट्स के अनुसार पर्यावरणीय आंदोलनों को लोगों और संगठनों के व्यापक नेटवर्क के रूप में देखा जाता है, जो पर्यावरणीय लाभों की खोज में सामूहिक कार्रवाई में लगे होते हैं।

रामचंद्र गुहा एवं गाडगिल के अनुसार पर्यावरणीय आंदोलन सामाजिक गतिविधियों को सचेत रूप से संगठित करने हैं जिससे पर्यावरणीय ह्रास को रोकने के लिए प्राकृतिक संसाधनों के सतत उपयोग को बढ़ावा दिया जा सके।

पर्यावरणीय आंदोलन प्राकृतिक संसाधनों के सतत प्रबंधन का समर्थन करते हैं। इनमें से कई आंदोलन पारिस्थितिकी, स्वास्थ्य और मानवाधिकारों पर केंद्रित होते हैं। पर्यावरणीय आंदोलन अत्यधिक संगठित व औपचारिक संस्थागत गतिविधियों से लेकर अनौपचारिक गतिविधियों तक तथा इनका भौगोलिक दायरा स्थानीय से लेकर वैश्विक स्तर तक हो सकता है। कुछ विद्वानों ने पर्यावरणीय आंदोलनों को विभिन्न उपनामों के अनुसार पहचान दी हैं जैसे **'आदिवासी या किसान आंदोलन'** या **'नए सामाजिक आंदोलन**', कुछ विद्वान तो इन्हें **'मध्यम वर्ग' या 'अभिजात वर्ग के आंदोलन'** के रूप में भी संबोधित करते हैं। इस प्रकार पर्यावरण आंदोलनों का उद्देश्य आने वाली पीढ़ियों के लिए एक स्वस्थ और संतुलित वातावरण सुनिश्चित करना है, ताकि मानवता और प्रकृति दोनों का अस्तित्व बना रहे।

भारत में पर्यावरण संरक्षण के आंदोलनों का उद्भव

वैश्विक स्तर पर पर्यावरण आंदोलन की शुरूआत 19वीं और 20वीं सदी की शुरुआत में देखी जा सकती हैं, जहां औद्योगिकीकरण के नकारात्मक प्रभावों से उपजे पर्यावरण संकटों का विरोध हुआ और समाज में पर्यावरणीय चेतना का विकास हुआ। भारत में पर्यावरण आंदोलन की औपचारिक शुरूआत मुख्य रूप से 70 के दशक में हुई मानी जाती है, हालांकि स्वतंत्रता पूर्व ब्रिटिश काल के राष्ट्रीय आंदोलनों एवं गतिविधियों में पर्यावरण संरक्षण की भावना विद्यमान थी। भारत के पर्यावरण न्याय आंदोलनों का इतिहास स्वतंत्रता पूर्व ब्रिटिश सरकार की विनाशकारी औपनिवेशिक नीतियों जैसे–: वन नियमन के नाम पर वन नियत्रण (मूल वासियों के वन उपजों के उपयोग पर पाबंदी) व्यवसायिक दोहन, प्राकृतिक संसाधनों से बेदखली आदि के विरुद्ध किसान आंदोलनों तथा आदिवासी आंदोलनों के माध्यम से प्रतिकार किया गया। ब्रिटिश शासन की नीतियों के विरुद्ध प्रतिरोध की इन घटनाओं में शामिल है जैसे– नील की खेती के खिलाफ का बंगाल किसान विद्रोह (1859–63), संथाल विद्रोह (1855–56),

चंपारण आंदोलन (1917), पहाड़ी राज्यों के वन आंदोलन, वन संरक्षण संबंधी नीतियों का विरोध आदि। स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान महात्मा गांधी ने प्रकृति के सम्मान व संरक्षण पर जोर दिया था और उन्होंने भारत के ग्रामीण जीवन और स्वावलंबन की वकालत की थी। महात्मा गांधी के नेतृत्व में चलाए गए राष्ट्रीय आन्दोलन के पर्यावरणीय मुद्दों को आंशिक रूप से शामिल किया गया था। पर्यावरणवादी लेखक **रामचंद्र गुहा** महात्मा गांधी को **'प्रारंभिक पर्यावरणविद'** मानते हैं। स्वतन्त्रता के बाद देश में बहुउद्देश्यी परियोजनाओं के माध्यम से तीव्र गति के विकास के प्रतिमान के कारण पारस्थितिकी सम्बन्धी समस्याएँ आयी। विकास के नाम पर जल संसाधन, वन और भूमि के असन्तुलित इस्तेमाल से इन संसाधनों पर आजीविका के लिए निर्भर समुदाय के सामने संकट उपस्थित हुए। भारत में प्राकृतिक संसाधनों के अविवेकपूर्ण दोहन एवं लोगों के विस्थापन के विरुद्ध असंतुष्ट जनसमुदाय ने पर्यावरण आन्दोलन शुरु किए। देश में पर्यावरणवाद संगठित पर्यावरण आंदोलन के रूप में यह 1970 के दशक में उभरकर सामने आया। भारत में पर्यावरण आन्दोलन की उत्पत्ति का प्रथम उद्घोष उत्तरांचल (तत्कालीन उत्तरप्रदेश) के गढ़वाल में चिपको आन्दोलन (1973) से हुआ। यह आंदोलन पर्यावरण संरक्षण और स्थानीय समुदायों के अधिकारों की रक्षा के लिए किया गया था, और इसे वैश्विक स्तर पर पर्यावरणीय संघर्षों का प्रतीक माना जाता है। 80 के दशक में देश के अलग इलाकों में जल, जंगल एवं जमीन की रक्षा के लिए पर्यावरणीय जन आंदोलनों हुए।

भारतीय पर्यावरण आंदोलन के उद्भव के कई प्रमुख कारण

70 एव 80 के दशक में भारतीय पर्यावरण आंदोलन के उद्भव के कई प्रमुख कारण थे, जो इस समय की सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय परिस्थितियों से जुड़े हुए थे। पर्यावरण आंदोलनों के उद्भव के प्रमुख कारणों को समेकित रूप से विवेचित किया जा सकता है :–

वनों की कटाई में वृद्धि एवं वन संसाधनों पर दबाव से उपजा आक्रोश (चिपको आन्दोलन), बडी विकास परियोजनाओं(बांध, खनन, उद्योग आदि) से बड़े पैमाने पर हुए विस्थापन (नर्मदा बचाओ आन्दोलन), औद्योगिकीकरण और शहरीकरण के कारण **बढ़ते प्रदूषण के स्तर,** बड़े बांधों और नहरों की योजनाओं से **जल संसाधनों पर बढ़ते दबाव,** जल संसाधनों का असमान वितरण, वनों की कटाई, अवैध शिकार, और प्राकृतिक संसाधनों के अंधाधुंध दोहन के कारण **वन्यजीवों और जैव विविधता के लिए उत्पन्न संकट (साइलेंट वैली आन्दोलन),** सरकारी नीतियों और औद्योगिक परियोजनाओं के कारण जंगलों, जल और भूमि पर अतिक्रमण से **आदिवासी और ग्रामीण समुदाय से उनके आजीविका के अधिकार** छीना जाना (जंगल बचाओ आन्दोलन), भारत में विकास असंगत नीतिय से **सामाजिक और आर्थिक असमानता को बढ़ावा आदि ।**

उक्त कारणों के साथ ही अन्तर्राष्ट्रीय स्तर सत्तर के दशक में वैश्विक स्तर की अन्तर्राष्ट्रीय पर्यावरणीय चेतना ने भी भारत में पर्यावरण आंदोलन को प्रेरित किया। वैश्विक स्तर पर आधुनिक पर्यावरण आन्दोलन को बढ़ावा देने के कारकों में अमेरीकी समुद्र विज्ञानी **राहेल लुईस कार्सन** की पुस्तक **'साइलेन्ट स्प्रिंग'** (1962) (डीडीटी कीटनाशक व सिंथेटिक पदार्थों के प्रयोग से पक्षियों की गिरावट), पर्यावरण कार्यकर्ता **जेम्स एस. फिलिप** के प्रदूषण विरोधी अभियान, 1972 में 'क्लब ऑफ रोम' (वैज्ञानिकों एवं राजनीतिक नेताओं के संघ) का **'द लिमिट्स टू ग्रोथ'** नामक प्रतिवेदन आदि थे। 1972 में स्वीडन के 'स्टाकहोम' में 'मानव पर्यावरण' पर संयुक्त राष्ट्र द्वारा आयोजित प्रथम वैश्विक सम्मेलन में पर्यावरणीय नीतियों और संरक्षण के महत्व पर जोर दिया।

अतः भारत में पर्यावरण से संबंधित अलग–अलग स्थानों पर, अलग–अलग समय पर, स्थानीय मुद्दों पर स्वतंत्र प्रतिक्रियाओं की श्रृंखला एवं पर्यावरण संरक्षण संबंधी वैश्विक परिप्रेक्ष में जनांदोलन विकसित हुए हैं।

भारत में प्रमुख पर्यावरण आंदोलन

1. **बिश्नोई आंदोलनः (1730)** भारतीय पर्यावरण आंदोलन का प्ररेणा स्रोत स्वतंत्रता पूर्व का बिश्नोई आन्दोलन था। राजस्थान के मारवाड़ क्षेत्र में खेजडली नामक गांव में जोधपुर के राजा के सैनिकों द्वारा हरे पेड़ों को काटने से बचाने के लिए अमृता देवी विश्नोई एवं 363 ग्रामवासियों के बलिदान की कहानी है। दुनिया में यह अपनी तरह का प्रथम आंदोलन था जिसमे वृक्षों के संरक्षण के लिये लोगों द्वारा पेड़ों को गले लगाने की रणनीति को अपनाकर जीवन उत्सर्ग किया गया। आंदोलन के फलस्वरूप पेड़ों की कटाई को रोककर राजा द्वारा माफी एवं संरक्षित क्षेत्र घोषित किया गया।
2. **चिपको आंदोलन (1973)–** चिपको आंदोलन की शुरुआत 24 अप्रैल 1973 को उत्तराखण्ड (तत्कालीन उत्तरप्रदेश) के चमोली जिले से हुई। इस आंदोलन की मुख्य मांग थी कि वन संसाधनों पर स्थानीय ग्रामीण जनता का अधिकार हो तथा वनों का व्यावसायिक दोहन बंद किया जाए।यह एक अहिंसक आंदोलन था, जिसमें ग्रामीण महिलाएं पेड़ों को बचाने के लिए उन्हें गले लगाकर खड़ी हो गईं। गांधीवादी नेता चंडीप्रसाद भट्ट, सुंदरलाल बहुगुणा और रैणी गांव की गौरा देवी एवं गंगा देवी जैसे आंदोलनकारियों ने इस आंदोलन का नेतृत्व किया। यह आंदोलन अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल रहा तथा 1980 में हिमालय क्षेत्र के हरित वनों की कटाई पर रोक लगा दी गई। चिपको आंदोलन ने सरकार और पूरे देश का ध्यान पर्यावरण संरक्षण की ओर आकर्षित किया और इस आंदोलन को वनों के प्रबंधन में सुधार की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम माना गया।
3. **साइलेंट वैली आंदोलन (1978–1985)–** यह आंदोलन केरल राज्य के पालक्कड़ जिले में स्थित साइलेंट वैली के जंगलों को बचाने के लिए किया गया था। यह केरल में कुतीपुझा नदी तट पर निर्मित पन–बिजली निर्माण के कारण इलाके के घने वर्षा वनों एवं जैव विविधता को नष्ट करने के खतरे को देखते हुए केरल शास्त्र साहित्य परिषद् के नेतत्व में स्थानीय वैज्ञानिकों पर्यावरण कार्यकर्ताओं का वीव्र विरोध आंदोलन था। आन्दोलन के फलस्वरूप परियोजना को निरस्त एवं 1985 में साइलेंट वैली को राष्ट्रीय आरक्षित वन क्षेत्र घोषित किया गया। यह आंदोलन जैव विविधता के संरक्षण और प्राकृतिक संसाधनों के सतत संरक्षण का प्रतीक बन गया।
4. **जंगल बचाओ आंदोलन (1982) –** बिहार के सिंहभूम जिले (वर्तमान में झारखण्ड) से आरंभ हुआ यह आंदोलन बिहार के प्राकृतिक साल के जंगलों को सागौन के पेड़ो के जंगलों में बदलने के सरकार के फैसले के विरुद्ध था। बाद में यह आंदोलन झारखण्ड और उड़ीसा तक फैल गया। जंगलों को बचाने के आदिवासी जनजातियां एकजुट हुईं।
5. **अप्पिको आंदोलन (1983)–** जिसे "दक्षिण भारत का चिपको आंदोलन" कहा जाता है। कर्नाटक के पश्चिमी घाट के क्षेत्र में हुआ। इस आंदोलन का उद्देश्य वनों की कटाई और वृक्षों की अवैध कटाई को रोकना था।1983 में कर्नाटक के उत्तर कन्नड़ जिले में वृक्षों को काटे जाने से रोकने के लिए साकनी गांव की महिलाएं, पुरुष व बच्चे बच्चों ने वृक्षों को बचाने के लिए चिपको आंदोलन की तर्ज पर गले लगाकर प्रदर्शन किया। आंदोलन ने स्थानीय समुदायों को पर्यावरण संरक्षण के महत्व के बारे में जागरूक किया। यह आंदोलन भी अपने उद्देश्य को प्राप्त करने में सफल रहा
6. **नर्मदा बचाओ आंदोलन (1985)** नर्मदा नदी घाटी परियोजना के तहत नर्मदा नदी पर बनाए जा रहे बड़े बांधों के खिलाफ था। यह आंदोलन विशेष रूप से सरदार सरोवर परियोजना के कारण हजारों लोगों के स्थापन एवं पुनर्वास के नीति के अभाव से बेदखली के विरुद्ध था। इस आंदोलन ने नर्मदा नदी पर बनने वाले बड़े बांधों के पर्यावरणीय और सामाजिक प्रभावों पर सवाल उठाया। इस आंदोलन का नेतृत्व मेधा

पाटकर एवं बाबा आम्टे ने किया। नर्मदा बचाओ आंदोलन ने न केवल पर्यावरण संरक्षण के मुद्दों को उठाया, बल्कि यह भी इंगित किया कि विकास परियोजनाओं से प्रभावित समुदायों के पुनर्वास और पुनर्स्थापना पर अधिक ध्यान दिया जाना चाहिए।

7. **टिहरी बांध विरोध आंदोलन (1990)–** यह आंदोलन उत्तराखंड के टिहरी में बन रहे बड़े बांध के खिलाफ था। भूगर्भीय संवेदनशील क्षेत्र में बन रहे बांध से भूकंप का खतरा, अन्य पारिस्थितिकी असंतुलन एवं लोगों के विस्थापन आदि के कारण टिहरी बांध पर रोक की मांग की गयी। वीरेन्द्रदत्त सकलानी एवं सुंदरलाल बहुगुणा आदि ने इस आंदोलन का नेतृत्व किया और बांध के पर्यावरणीय प्रभावों पर ध्यान आकर्षित किया। यह आंदोलन पर्यावरणीय संरक्षण और विकास परियोजनाओं के बीच संतुलन की आवश्यकता की ओर संकेत करता है।

भारत के पर्यावरण आंदोलन की विशेषताएं

- **स्थानीय समुदायों की भागीदारी–** भारतीय पर्यावरण आंदोलन की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता स्थानीय समुदायों की सक्रिय भागीदारी है। पश्चिम के विपरीत, जहां आधुनिक पर्यावरणवाद को वैज्ञानिकों ने जन्म दिया था भारत में पर्यावरण संबंधी आंदोलन जमीनी स्तर पर संचालित किए जाते रहे हैं. इनमें ज्यादातर की बागडोर शिक्षित एवं अभिजातीय वर्ग की नहीं वरन् ग्रामीण एवं जनजातीय समुदायों के हाथों में रही है। भारत के इन जनांदोलनों में आदिवासी, ग्रामीण महिलाएं और हाशिए पर रहने वाले लोग शामिल थे, जो सीधे तौर पर वनों, जल, और भूमि जैसे प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भर थे। **चिपको आंदोलन** और **नर्मदा बचाओ आंदोलन** इसका उदाहरण हैं, जहां स्थानीय समुदायों ने पर्यावरण संरक्षण और अपने आजीविका के अधिकारों के लिए संघर्ष किया।

- **प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण पर जोर :–** भारतीय पर्यावरण आंदोलन का एक प्रमुख लक्ष्य प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण रहा है। वनों, जल स्रोतों, और जैव विविधता की रक्षा के लिए ये आंदोलन महत्वपूर्ण रहे हैं। **साइलेंट वैली आंदोलन और चिपको आंदोलन** में **वन संरक्षण** पर ध्यान दिया गया, **नर्मदा बचाओ आंदोलन** ने नदी संरक्षण और **विस्थापित लोगों के पुनर्वास** पर जोर दिया।

- **विकास और पर्यावरण के बीच संतुलन की मांग :–** भारतीय पर्यावरण आंदोलन विकास और पर्यावरण संरक्षण के बीच संतुलन बनाने की मांग करता रहा है। बड़े बांध, औद्योगिक परियोजनाएं, और वनों की कटाई जैसी गतिविधियों ने पर्यावरण को नुकसान पहुंचाया और स्थानीय लोगों को विस्थापित किया। आंदोलनों ने **सतत विकास या टिकाऊ (Sustainable Development)** की वकालत की, जिसमें विकास के साथ–साथ पर्यावरण और लोगों के अधिकारों की रक्षा पर जोर दिया गया।

- **अहिंसक और जन–आधारित आंदोलन :–** भारतीय पर्यावरण आंदोलन मुख्य रूप से अहिंसक विरोध और जन–आधारित आंदोलनों पर आधारित रहे हैं। महात्मा गांधी के विचारों से प्रेरित होकर इन आंदोलनों में अहिंसक प्रतिरोध, सत्याग्रह, और सिविल अवज्ञा को अपनाया गया। जन आंदोलन के इन रचनात्क साधनों में शांतिपूर्ण विरोध प्रदर्शन (चिपको, अप्पिको आन्दोलन), जन जागरूकता हेतु पदयात्राएं, गीत,नारे, नागरिक सभाएं, मैराथन दौड़ (साइलेंट वैली आंदोलन, केरल) सार्वजनिक बहस, जल समर्पण, भूख हड़ताल, घेरो बांध, रास्ता रोको, (नर्मदा बचाओ आंदोलन) अनशन आदि शामिल।

- **महिलाओं की केंद्रीय भूमिका :–** भारतीय पर्यावरण आंदोलनों में महिलाओं की भागीदारी विशेष रूप से उल्लेखनीय रही है। ग्रामीण महिलाएं वनों और जल स्रोतों पर अपनी आजीविका के लिए निर्भर थीं, इसलिए उन्होंने इन आंदोलनों में अग्रणी भूमिका निभाई। **चिपको आंदोलन में गौरा देवी और नर्मदा बचाओ**

आंदोलन में महिलाओं की भागीदारी इसका उदाहरण हैं। चिपको आंदोलन से **'पर्यावरण नारीवाद'** की अवधारणा को प्रेरणा मिली देश के अन्य जन आंदोलन में भी बेहतर पर्यावरण पाने की प्रबल इच्छा शक्ति व समर्पण से पर्यावरण विनाश के विरुद्ध महिलाओं ने योद्धा की तरह कार्य किया है।महिलाओं ने इन आंदोलनों को स्थानीय और वैश्विक स्तर पर मजबूती प्रदान की।

- **विभिन्न मुद्दों का समावेश :–** भारतीय पर्यावरण आंदोलन एक व्यापक आंदोलन है, जिसमें कई मुद्दे शामिल हैं, जैसे : वनों की कटाई, प्रदूषण, जल संरक्षण, जैव विविधता, और विस्थापन सुन्दरलाल बहुगुणा का चिपको आंदोलन में दिया नारा था– **'पारिस्थितिकी स्थायी अर्थव्यवस्था है।'** ये आंदोलन स्थानीय, क्षेत्रीय और राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न पर्यावरणीय समस्याओं को संबोधित करते हैं और उनमें सुधार की मांग करते हैं।

- **सरकारी नीतियों पर प्रभाव :–** इन आंदोलनों ने भारत सरकार की पर्यावरण संबंधी नीतियों और कानूनों को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। चिपको आंदोलन और अन्य आंदोलनों के प्रभाव के कारण वन संरक्षण अधिनियम (1980) और पर्यावरण संरक्षण अधिनियम (1986) जैसे कानून बने। ये कानून पर्यावरण संरक्षण के लिए एक मजबूत कानूनी ढांचा प्रदान करते हैं।

भारत में पर्यावरणीय आंदोलनों के प्रभाव

- **पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता–** भारतीय पर्यावरण आंदोलन ने शासक एवं शासितों में पर्यावरण संरक्षण के प्रति व्यापक जागरूकता का प्रसार किया है। आंदोलनों के फलस्वरूप पर्यावरणीय मुद्दों पर चेतना शहरी और ग्रामीण दोनों क्षेत्रों में प्रसारित हुई और पर्यावरण संरक्षण की दिशा में सभी पक्षकारों (स्टेक हॉल्डर्स) ने महत्वपूर्ण कदम उठाए।

- **स्थानीय समुदायों के अधिकारों की रक्षा–** पर्यावरण आंदोलनों ने स्थानीय समुदायों, विशेष रूप से आदिवासियों और ग्रामीणों के अधिकारों की रक्षा की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान दिया। नर्मदा बचाओ आंदोलन और चिपको आंदोलन जैसे आंदोलनों ने यह दिखाया कि प्राकृतिक संसाधनों पर 'पहला हक' उन लोगों का होना चाहिए जो इन पर अपनी आजीविका के लिए निर्भर हैं। इन आंदोलनों ने विस्थापन, पुनर्वास और मुआवजे के मुद्दों पर सरकार को अधिक संवेदनशील बनने के लिए प्रेरित किया।

- **सरकारी नीतियों और कानूनों में सुधार :–** पर्यावरण आंदोलनों की सक्रिय भूमिका से स्वतंत्रता के बाद भी जारी रखी गई औपनिवेशिक शासन की असंगत पर्यावरणीय नीतियों एवं निष्प्रयों को प्रकाश में लाया गया पर्यावरण संरक्षण हेतु सुसंगत नीतियां एवं जनहितैषी कानून बनाने के लिए प्रेरित किया गया। भारतीय सरकार ने पर्यावरण संरक्षण संबंधी कई महत्वपूर्ण कानून संस्थागत निर्णय किए गए। भारतीय संविधान में **1976 में 42वें संविधान संशोधन** से पर्यावरण की रक्षा व संवर्धन को मौलिक कर्त्तव्य एवं नीति निर्देशक तत्व के रूप में संविधान में जोड़ा गया। 1980 में हिमालय क्षेत्र में 15 वर्षों पर वन कटाव पर रोक (चिपको आन्दोलन का प्रभाव)। 1985 में **'पर्यावरण एवं वन मंत्रालय'** का गठन किया गया। **पर्यावरण संरक्षण के कानून** जैसेः **वन संरक्षण अधिनियम (1980), पर्यावरण संरक्षण अधिनियम (1986) तथा नीतियां जैसे– राष्ट्रीय वन नीति (1988), 2006 में नई राष्ट्रीय पर्यावरण नीति 2008 में जलवायु परिवर्तन पर राष्ट्रीय क्रियान्वयन योजना** लागू की गई। इस दौरान जनाधिकार संगठनों द्वारा **जनहित याचिकाओं (पी.आई.एल.)** के माध्यम से न्या के लिए न्यायपालिका से गुलाहर लगाने पर भारतीय न्याय पालिका ने पर्यावरणीय न्याय को सुनिश्चित करने के लिए महत्वपूर्ण दिशा–निर्देश प्रदान किये।

- **विभिन्न मुद्दों का समावेशः** भारतीय पर्यावरण आंदोलन एक व्यापक आंदोलन है, जिसमें कई मुद्दे शामिल हैं, जैसे कि वनों की कटाई, प्रदूषण, जल संरक्षण, जैव विविधता, और विस्थापन सतत विकास पर आधारित नीति निर्माण, सहभागी लोकतंत्र आदि। पर्यावरण संरक्षण के जन आंदोलनों की प्रेरणा से देश में **बीज बचाओ, नव दान्य, कृषि की परम्परागत तकनीकों को अपनाना, सामुदायिक वन प्रबंधन** जैसी मुहिमों को प्रारंभ किया।ये आंदोलन स्थानीय, क्षेत्रीय और राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न पर्यावरणीय समस्याओं को संबोधित करते हैं और उनमें सुधार की मांग करते हैं।

- एकजुटता एवं वंचितों की आवाज– पर्यावरण क्षय से समाज का प्रत्येक प्रभावित वर्ग जो अलग अलग जाति, धर्म, सम्प्रदाय, भाषा आदि में विभक्त था, को इन अभियानों ने एकजुट किया है। भारतीय महिलाओं की पर्यावरण संबंधी सार्वजनिक मुद्दों पर भागीदारी अनूठा दृष्टांत है। पर्यावरणविद रामचंद्र गुहा के अनुसार 'भारत में पर्यावरण आंदोलन यह **'गरीबों का पर्यावरणवाद'** था। यह '**खाली पेट पर्यावरणवाद'** है जहां महिलाएं एवं लड़कियां निःसंदेह गरीब एवं बहुआयामी भेदभाव की शिकार हैं, अनेक जनांदोलनों में वे अग्रिम पंक्ति में रही क्योंकि ये आंदोलन उनकी आजीविका, सम्मान, पहचान और संस्कृति की रक्षा से संबंधित था।'

निष्कर्ष

भारत में पर्यावरण संरक्षण में प्रारंभिक काल (1970 और 1980 दशक) के जनआन्दोलनों के विश्लेषणात्मक अध्ययन से ज्ञात होता है कि उक्त आंदोलन अपने उद्देश्य, प्रकृति एवं प्रभावशीलता की दृष्टि से जनसाधारण के संघर्ष की अनूठी अभिव्यक्तियाँ रही है। इन जनान्दोलनों ने न केवल पारिस्थितिकी विषयों पर ध्यान केन्द्रित किया है, बल्कि मानव समुदाय के आत्मसम्मान, अस्मिता, सामाजिक न्याय, सहभागी लोकतन्त्र, मानवाधिकार के आधारभूत मुद्दों को भी उठाया है। उत्तर में हिमालय से लेकर दक्षिण में केरल के उष्ण कटिबन्धीय जंगलों और पूर्व में गुजरात से लेकर पश्चिम में त्रिपुरा तक पारिस्थितिक स्थिरता को प्रभावित करने वाली अविवेकपूर्ण नीतियों के विरुद्ध जनता के ये स्वतः स्फूर्त अभियान इस आशा का संचार करते हैं कि अपनी प्रकृति के रक्षण, संवर्द्धन एवं सन्तुलित उपयोग के लिए जमीन से जुड़े मानव समुदाय के पास व्यवहारिक सोच, प्रयत्नशीलता का सामर्थ्य, संगठन की शक्ति और ईमानदार निष्ठाएँ मौजूद हैं।

भारत के प्रारंभिक पर्यावरण आंदोलनों ने समाज, सरकार और नीति निर्माण प्रक्रियाओं पर गहरा प्रभाव डाला है। भारत की नीतियों कानूनों की दशा को पर्यावरण के प्रति अधिक संवेदनशील बनाया है। ये पर्यावरण आंदोलन भारतीय समाज में पर्यावरणीय जागरूकता की अलख जगाने में सफल रहे। इन आंदोलनों ने पर्यावरणीय न्याय, सतत विकास और प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के मुद्दों को राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रमुखता से उठाया। साथ ही नीतिगत ढांचे को सशक्त पर्यावरणीय कानून व सुसंगत नीतियों को अपनाये जाने के लिए प्रेरित किया। भारत में पर्यावरण संरक्षण के लिए जनता के सामूहिक प्रयासों की गाथाएं जनता के उत्तरदायित्व, संवेदनशीलता, सामूहिक जिम्मेदारी, व्यक्तिगत कर्त्तव्य एवं संचेतन नागरिकता का प्रतीक है। ये आंदोलन दृष्टान्त है इस तथ्य के कि **'विकास'** के नाम पर बेदखलकया गया तथा हाशिये पर रखा वंचित वर्ग, निर्धन महिलाएं, मूल निवासी आदि ये सभी अपने जल, जंगल, जमीन, जीव–जन्तु और जलवायु संरक्षण के लिए सदैव तत्पर, प्रतिबद्ध चैतन्य एवं एकजुट हो सकता है।

स्वतंत्र भारत के प्रथम अग्रणी आंदोलन ''चिपको आंदोलन'' में वन संरक्षण के लिए दिया गया नारे की अनुगूंज देश एवं दुनिया में सदैव गुजायमान रहेगा :–

"क्या है जंगल के उपकार,मिट्टी पानी और बयार।
मिट्टी पानी और बयार,जिंदा रहने के आधार।"

*आचार्य, राजनीति विज्ञान
**सहायक आचार्य
राजकीय कन्या महाविद्यालय, किशनपोल
जयपुर (राज.)

सन्दर्भ ग्रन्थ

- सिंह, ए., (2015) 'समकालीन भारत में विकास की प्रक्रिया और सामाजिक आन्दोलन', ओरियंट ब्लैकस्वॉन प्रकाशन, तेलंगाना
- माधव गाडगिल एवं रामचन्द्र गुहा (1998) टूवर्डस अ प्रिसपेक्टिव ऑन एनवायरनमेन्टल मूवमेन्ट्स इन इण्डिया द इण्डियन जर्नल ऑफ सोशल वर्क वॉल्यूम 59, ईश्यू 1, पार्ट 2 , पृष्ठ 450–472
- रूट्स क्रिस्टोफर, (1999), 'एनवायरमेन्टल मूवमेन्ट्स फ्रॉम द लोकल टू द ग्लोबल', एनवायरमेन्टल पॉलिटिक्स, वॉल्यूम 8, नं. 1, पृष्ठ 1–12
- बी. रत्ना रेड्डी (1998), 'एनवायरमेन्टल मूवमेन्ट्स इन इण्डिया सम रिफ्लेक्शन', जॉर्नल ऑफ इण्डियन स्कूल ऑफ पॉलिटिकल इकॉनोमी, वॉल्यूम 10, नं. 4, पृष्ठ 685
- रामचन्द्र गुहा, 'सोशल इकॉलॉजिकल रिसर्च इन इण्डिया', स्टेटस रिपोर्ट, इाकॉनॉमिक्स पॉलिटिकल वीकली, वॉल्यूम 32, नं. 7, पृष्ठ 345–352
- अविराम शर्मा, (अगस्त, 2007), इमरजेन्स ऑफ अनेलेसिस download from http//ecovista.wordpress.com
- प्रवीन सेठ, (1947) 'एनवायरनमेन्टलिज्म पॉलिटिक्स इकॉलॉजी एण्ड डवलपमेन्ट', रावत पब्लिकेशन, जयपुर एण्ड न्यू देहली
- करन, पी.पी. (1994) 'एन्वायरनमेंटल मूवमेंट्स इन इण्डिया', ज्योग्राफिकल रिव्यू, वोल्यूम 84:32
- टर्नर, कैथरी, जी., 'चिपको एण्ड द रोज कलर्ड ग्लासेज़ ऑफ इकोफेमिनिज्म', 2003 www.utexas.edu/research/student/urj/journals/chipko_for_URJ.doc.
- वेबर, थोमस, 'हगिंग द ट्रीज : द स्टोरी ऑफ द चिपको मूवमेंट', विकिंग पब्लिशर्स, न्यू देहली, 1988
- https://womensearthalliance.org//wea-voices/the-original-tree-huggers-let-us-not-forget-their-sacrifice-on-earth-day/